INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान
1st Grade

स्कूल व्याख्याता

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

इतिहास भूगोल + कला एवं संस्कृति + (राजस्थान + भारत)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान Ist Grade (स्कूल व्याख्याता)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान Ist Grade (स्कूल व्याख्याता)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - **https://wa.link/wt3ks1**

Online Order करें - **https://shorturl.at/hkAY3**

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	भारत इतिहास	
1.	गुप्त काल एवं मुग़ल काल में साहित्य, कला और वास्तु कला का विकास	1
2.	मुग़ल कालीन स्थापत्य कला, वास्तु कला, चित्र कला	8
3.	1857 का स्वतंत्रता संग्राम	18
4.	राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय	27
5.	राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता • सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण • राजा राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती और विवेकानंद	41
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता • कालीबंगा • आहड़ सभ्यता • गणेश्वर सभ्यता • बैराठ सभ्यता	54
2.	8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक राजस्थान का इतिहास	59
3.	अजमेर के चौहान	62
4.	दिल्ली सल्तनत के साथ संबंध (मेवाड़, रणथम्भोर और जालोर) • राणा सांगा • महाराणा प्रताप सिंह • राजसिंह	63

	• चन्द्रसेन • मानसिंह • महाराजा रायसिंह	
5.	राजस्थान में मुगल शासन	103
6.	1857 और राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास	106
7.	राजस्थान में राजनैतिक जाग्रति	111
8.	प्रजामंडल आंदोलन	116
9.	किसान और आदिवासी आंदोलन	119
10.	राजस्थान का एकीकरण	128
	राजस्थान में समाज एवं धर्म	
1.	लोक देवता और लोक देवियाँ	132
2.	राजस्थान के संत	139
3.	वास्तुकला – मंदिर किले और महल	146
4.	पेंटिंग्स – चित्रकला	160
5.	मेले और त्योहार	167
6.	सामाजिक रीतिरिवाज, प्रथाएं, ठिकाना व्यवस्था	176
7.	वस्त्र एवं आभूषण	185
8.	लोक संगीत और लोक नृत्य	189
9.	भाषा और साहित्य	196
	राजस्थान का भूगोल	
1.	स्थिति एवं विस्तार - सामान्य परिचय	204
2.	प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं	222
3.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	231

4.	जलवायु	246
5.	जनसंख्या वितरण, विकास, साक्षरता, लिंगानुपात	251
6.	कृषि	257
7.	पशुपालन	263
8.	खनिज संसाधन	270
9.	ऊर्जा संसाधन	280
10	पर्यटन और परिवहन	288
11.	राजस्थान राज्य के प्रमुख उद्योग	296

अध्याय – I

गुप्त काल एवं मुगल काल में साहित्य, कला और वास्तुकला का विकास

गुप्तयुगीन कला एवं वास्तुकला

वास्तु-कला – मंदिर

- **गुप्तयुगीन वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण मंदिर हैं। वस्तुतः मंदिर के अवशेष हमें इसी काल से मिलने लगते हैं।** गुप्तकालीन मंदिरों की कुछ सामान्य विशेषतायें हैं जो इस प्रकार हैं-
- गुप्तकालीन मंदिरों का निर्माण सामान्यतः एक ऊँचे चबूतरे पर हुआ था, जिन पर चढ़ने के लिए चारों ओर से सीढियाँ बनाई गयी थी।
- **प्रारंभिक मंदिरों की छतें चपटी** होती थी, किन्तु **आगे चलकर शिखर** भी बनाये जाने लगे।
- मंदिर के भीतर एक चौकोर अथवा वर्गाकार कक्ष बनाया जाता था, जिसमें **मूर्ति रखी जाती** थी। यह मंदिर का **सबसे महत्त्वपूर्ण भाग था, जिसे गर्भगृह कहा जाता था।**
- गर्भगृह तीन ओर से दीवारों से घिरा होता था। जबकि एक ओर प्रवेशद्वार बना रहता था।
- पहले गर्भगृह की दीवारें सादा होती थी, किन्तु बाद में चलकर उन्हें मूर्तियों तथा अन्य अलंकरणों से सजाया जाने लगा।
- गर्भगृह के चारों ओर ऊपर से आच्छादित प्रदक्षिणा-पथ बना होता था।
- गर्भगृह के प्रवेशद्वार पर बने चौखट पर मकरवाहिनी गंगा और कूर्मवाहिनी यमुना की आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं, जो गुप्तकला की अपनी विशेषता है। ऊपर के शिरापट्ट तथा पार्श्व भाग में भी हंस-मिथुन, स्वस्तिक, श्रीवृक्ष, मंगलकलश, शंख, पद्म आदि पवित्र मांगलिक चिन्हों एवं प्रतीकों का भी अंकन किया गया है। द्वार के अलंकरण के संबंध में वराहमिहिर का मत है, कि द्वार शाखा के चौथाई भाग में प्रतिहारी (द्वारपाल) तथा शेष में मंगल विहग, श्रीवृक्ष, स्वास्तिक, घट, मिथुन, पत्रवल्ली आदि का अंकन का उल्लेख किया है।
- मंदिर के वर्गाकार स्तम्भों के शीर्षभाग पर चार सिंहों की मूर्तियाँ एक दूसरे से पीठ सटाये हुए बनाई गयी हैं।
- **गर्भगृह में केवल मूर्ति स्थापित रहती थी।** उसमें उपासकों के एकत्र होने का कोई स्थान नहीं बनाया गया था।
- **गुप्तकाल के अधिकांश मंदिर पाषाण निर्मित हैं।** केवल भीतरगाँव तथा सिरपुर के मंदिर ही ईंटों से बनाये गये हैं।

गुप्तकालीन महत्त्वपूर्ण मंदिर मंदिर स्थान

1- विष्णुमंदिर तिगवा (जबलपुर मध्य प्रदेश)
2- शिव मंदिर भूमरा (नागोद मध्य प्रदेश)
3- पार्वती मंदिर नचना-कुठार (मध्य प्रदेश)
4- दशावतार मंदिर देवगढ़ (झांसी, उत्तर प्रदेश)
5- शिवमंदिर खोह (नागौद, मध्य प्रदेश)
6- भीतरगांव का मंदिर लक्ष्मण मंदिर (ईंटों द्वारा निर्मित) भितरगांव (कानपुर, उत्तर प्रदेश)

प्रमुख मंदिर –

- गुप्त काल में मंदिर बनाने का विकास प्रारम्भ हो गया था। **गुप्त काल स्थापत्य कला, साहित्य और संस्कृति के लिए स्वर्ण युग कहा गया है।**
- **गुप्त काल की वास्तुकला को सात भागों में बाँटा जा सकता है- राजप्रासाद, आवासीय गृह, गुहाएँ, मंदिर, स्तूप, विहार तथा स्तम्भ।**
- राजप्रासाद की बहुत प्रशंसा की है। इस समय के घरों में कई कमरे, दालान तथा आँगन होते थे। छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं जिन्हें सोपान कहा जाता था। **प्रकाश के लिए रोशनदान बनाये जाते थे जिन्हें वातायन कहा जाता था।**
- गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म के प्राचीनतम गुहा मंदिर निर्मित हुए। ये भिलसा (मध्य-प्रदेश) के समीप उदयगिरि की पहाड़ियों में स्थित हैं। ये गुहाएँ चट्टानें काटकर निर्मित हुई थीं। उदयगिरि के अतिरिक्त अजन्ता, एलोरा, औरंगाबाद और बाघ की कुछ गुफाएँ गुप्तकालीन हैं।
- गुप्तकाल में मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्र मथुरा, सारनाथ और पाटिलपुत्र थे।

गुप्त काल की मूर्तिकला

- गुप्त मूर्तियाँ उस कलात्मक प्रतिभा को दर्शाती हैं जो गुप्त वंश में प्रमुख थी। भारत ने ५ वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के रूप में एक और युग की शुरुआत देखी। और गुप्त काल की शुरुआत के साथ, देश को मूर्तिकला के शास्त्रीय रूप में बदल दिया गया।
- भारत में गुप्त साम्राज्य ने मूर्तियों और स्मारकों के निर्माण के लिए अपनी शैली विकसित की। गुप्तकालीन मूर्तियों की इन विशेषताओं का तत्कालीन समकालीन कारीगरों द्वारा धार्मिक रूप से अनुसरण किया गया था। **एलीफेंटा गुफा मंदिर और तमिलनाडु राज्य के कांचीपुरम में संरचनात्मक मंदिर गुप्त शासकों की स्थायी विरासत हैं।**

गुप्तकालीन मूर्तियों की विशेषताएं

- गुप्त साम्राज्य भर में निर्मित सभी मूर्तियाँ अपेक्षाकृत समान 'शास्त्रीय' शैली की उपस्थिति के लिए चिह्नित की जा सकती हैं। 5 वीं शताब्दी के दौरान सांप मूर्तिकला की एक आवश्यक शैली बनाते हैं। इनके अलावा, गुप्त युग में **टेराकोटा** भी ध्यान देने योग्य है।
- सबसे प्रतिष्ठित छवि सशस्त्र भगवान विष्णु की मूर्ति है। गुप्तोत्तर काल से संबंधित रॉक-कट मंदिरों की मूर्तिकला समान महत्व की है।

गुप्तकालीन मूर्तियों की विशेषताएं

- गुप्त साम्राज्य भर में निर्मित सभी मूर्तियां अपेक्षाकृत समान 'शास्त्रीय' शैली की उपस्थिति के लिए चिह्नित की जा सकती हैं। 5 वीं शताब्दी के दौरान सांप मूर्तिकला की एक आवश्यक

शैली बनाते हैं। इनके अलावा, गुप्त युग में टेराकोटा भी ध्यान देने योग्य है।

- सबसे प्रतिष्ठित छवि सशस्त्र भगवान विष्णु की मूर्ति है। गुप्तोत्तर काल से संबंधित रॉक-कट मंदिरों की मूर्तिकला समान महत्व की है। गुप्त साम्राज्य की कला और वास्तुकला में गुप्त काल के दौरान धर्मनिरपेक्ष वास्तुकला, गुप्त काल की बौद्ध संरचनात्मक इमारतें और गुप्त युग की ब्राह्मणवादी वास्तुकला भी शामिल थी।

गुप्त वंश की गुफा मूर्तियां

- गुप्त काल को रॉक कट गुफाओं के लिए भी जाना जाता था। एलोरा की गुफाओं की मूर्तियाँ, एलिफेंटा की गुफाओं की मूर्तियाँ और अजन्ता की गुफाएं देखने लायक हैं।
- **पूर्ण रूप से आरंभिक गुप्त शैली में गुप्तकालीन मूर्तियों के सबसे पुराने नमूने मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा और उदयगिरि गुफाओं के हैं,** जो पास में मौजूद हैं। इसका निर्माण 5 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मथुरा परम्परा में किया गया था।

गुप्त वंश की मंदिर मूर्तियां

- गुप्त शासकों की अवधि सार्वभौमिक उपलब्धि की आयु थी, एक शास्त्रीय युग, जैसा कि गोएत्ज़ के शब्दों में `जीवन का एक आदर्श, नायाब शैली` है।
- **गुप्त शासन की अवधि के दौरान धार्मिक वास्तुकला काफी लोकप्रिय थी।** इसलिए भारत में बौद्ध और जैन मंदिरों को पूरे साम्राज्य में खड़ा किया गया और महायान पंथों की अधिक जटिल छवियां अस्तित्व में आईं।
- मंदिरों में मूर्तिक तत्व थे जैसे कि **`नागा`** और **`यक्ष`** को दो महान आस्तिक पंथों के देवताओं के रूप में स्वतंत्र पंथ छवियों के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था। दशावतार मंदिर (देवगढ़) की मूर्ति, मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर में भीतरगाँव मंदिर की मूर्ति, वैष्णवती तिगावा मंदिर और अन्य भी गुप्तकालीन मूर्तियों के कुछ उदाहरण हैं।
- गुप्त काल के दौरान अन्य स्थापत्य चमत्कारों में पार्वती मंदिर (नचना) की मूर्ति, शिव मंदिर की मूर्ति (भुमरा) और विष्णु मंदिर (तिगावा) की मूर्ति शामिल हैं।
- इस तरह की मूर्तियों ने मथुरा और गांधार जैसे प्रतिष्ठित कला शैलियों के प्रभाव को अपनी शैली में प्रदर्शित किया। **गुप्त युग के दौरान सारनाथ के `स्थायी बुद्ध और उत्तर प्रदेश में मथुरा के `बैठे बुद्ध भी मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं।**

गुप्त काल में साहित्य

- गुप्तकाल में ही अधिकांश पुराणों का संकलन हुआ। प्रारम्भ में पुराण रचना से चारण लोग जुड़े हुए थे। उन चारणों में लोमहर्ष और उसके पुत्र उग्रसर्व प्रमुख हैं। अधिकांश पुराणों से वे जुड़े हुए थे, किन्तु आगे चलकर पुराण रचना का कार्य ब्राह्मणों के हाथों में चला गया।
- गुप्त काल में संस्कृत भाषा और साहित्य का अप्रतिम विकास हुआ। संस्कृत का प्रयोग शिलालेख, स्तम्भलेख, दान-पत्र लेख आदि में हुआ। इसी भाषा में इस युग के महान् कवियों और साहित्यकारों ने अपनी अनेक कालजयी रचनाओं का प्रणयन किया।

गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनायें -

- गुप्त काल को संस्कृत साहित्य का **स्वर्ण युग** माना जाता है। **बार्नेट** के अनुसार 'प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्त काल का वह महत्त्व है जो यूनान के इतिहास में पेरिक्लीयनयुग का है।' **स्मिथ** ने गुप्त काल की तुलना ब्रिटिश इतिहास के 'एजिलाबेथन' तथा 'स्टुअर्ट' के कालों से की है। गुप्त काल को श्रेष्ठ कवियों का काल माना जाता है। इस काल के कवि को दो भागों में बांटा गया है,-
- प्रथम भाग में वे कवि आते हैं जिनके विषय में हमें अभिलेखों से जानकारी मिलती है हालांकि इनकी किसी भी कृति के विषय में जानकारी नहीं है। इस श्रेणी में हरिषेण, शाव(वीरसेन), वत्सभट्टि और वासुल आते हैं।
- द्वितीय श्रेणी में वे कवि आते हैं जिनकी रचनाओं के बारे में हमें ज्ञान है, जैसे कालिदास, भारवि, भट्टि, मातृगुप्त, भर्तृश्रेष्ठ तथा विष्णु शर्मा आदि।

हरिषेण

महादण्डनायक ध्रुवभूति का पुत्र हरिषेण **समुद्रगुप्त के** समय में सान्धिविग्रहिक कुमारामात्य एवं महादण्डनायक के पद पर कार्यरत था। हरिषेण की शैली के विषय में जानकारी 'प्रयाग स्तम्भ' लेख से मिलती है। हरिषेण द्वारा स्तम्भ लेख में प्रयुक्त छन्द कालिदास की शैली की याद दिलाते हैं। हरिषेण का पूरा लेख 'चंपू (गद्य-पद्य-मिश्रित) शैली' का एक अनोखा उदाहरण है। इनके द्वारा रचित **महाकाव्य** –

शाव (वीरसेन)

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में सान्धिविग्रहिक अमात्य पद पर कार्यरत शाव की काव्य शैली के विषय में जानकारी एकमात्र स्त्रोत 'उदयगिरि गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण लेख है। लेख के आधार पर यह माना जाता है कि शाव व्याकरण, न्याय एवं राजनीति का ज्ञाता एवं **पाटिलिपुत्र** का निवासी था।

वत्सभट्टि

- इनकी काव्य शैली के विषय में जानकारी मालव संवत के 'मंदसौर के स्तम्भ' लेख से मिलती है। इस लेख में कुल 55 श्लोक हैं, जिनमें पहले तीन श्लोकों में सूर्य स्तुति की गई है।
- वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल 9 श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है।

कालिदास

- संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य। कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक 'अभिज्ञान

शाकुन्तलम्' है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।

भारवि

- **'किरातार्जुनीयम्' महाभारत** के वनपर्व पर आधारित है इसमे कुल 18 सर्ग है।

भट्टि

- इनके द्वारा रचित '**भट्टिकाव्य**' को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	नाटककार	नाटक का विषय
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	दुष्यंत तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शाकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वेश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	भास	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भरत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

- विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न - भिन्न संस्करण निकल चुके हैं। पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है। 16 वीं सदी के अंत तक इस ग्रंथ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेज़ी भाषाओं में किया जा चुका था। पंचतत्र 5 भागों में बंटा है-
    1. मित्रभेद,
    2. मित्रलाभ.
    3. सन्धि-विग्रह,
    4. लब्ध-प्रणाश,
    5. अपरीक्षाकारित्व।

गुप्तकाल के धार्मिक ग्रंथ

पुराण

पुराणों के वर्तमान रूप की रचना गुप्त काल में ही हुई, इनमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। पुराणों का अंतिम रूप से संकलन भी गुप्त काल में हुआ है। दो महान गाथा काव्य रामायण और महाभारत ईसा की चौथी सदी (गुप्तकाल) में पूरे हो चुके थे। अतः इनका संकलन गुप्त युग में ही हुआ। 'रामायण' में परिवार रूपी संस्था का आदर्श रूप वर्णित है। 'महाभारत' में दुष्ट शक्ति पर इष्ट शक्ति की विजय दिखाई गई है। 'भगवद्गीता' प्रतिफल की कामना के बिना कर्तव्य पालन के निर्देश देती है।

स्मृतियां

गुप्त काल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति की स्मृतियां लिखी गई। इनमें 'याज्ञवल्क्य स्मृति' सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इस स्मृति में आचार, व्यवहार, प्रायश्चित आदि का उल्लेख है। **हीनयान** (बौद्ध धर्म) शाखा के 'बुद्ध घोष' ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इनका प्रसिद्ध गंथ 'विसुद्धिमग्ग' है। जैन दार्शिनिक आचार्य 'सिद्धसेन' ने **न्याय दर्शन** पर 'न्यायवताम्' ग्रंथ लिखा है।

गुप्तकालीन तकनीक ग्रंथ

रचनाकार	रचना
चन्द्रगोमिन	चन्द्र व्याकरण
अमर सिंह	अमरकोष (संस्कृत का प्रमाणित कोष)
कामन्दक	नीतिसार (कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्रभावित)
वात्स्ययान	कामसूत्र

विज्ञान

गुप्त काल में खगोल शास्त्र, गणित तथा चिकित्सा शास्त्र का विकास भी अपने उत्कर्ष पर था।

वराहमिहिर

मुख्य लेख : वराहमिहिर

अध्याय – 2

मुगल कालीन स्थापत्य कला, वास्तुकला चित्रकला

स्थापत्य कला (वास्तुकला) Architecture

- अन्य कलाओं के अनुरूप वास्तुकला के क्षेत्र में मुगलकाल नवीनताओं और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के साथ-साथ तुर्क अफगान काल में प्रारंभ प्रवृत्तियों के विकास के चरमोत्कर्ष की ओर उन्मुख प्रक्रियाओं का युग था ।
- सम्पूर्ण मुगलकाल की वास्तुकलात्मक शैली पर हिन्दू प्रभाव बना रहा.
- इस कला में फारस, तुर्की, मध्य एशिया, गुजरात, जौनपुर, बंगाल आदि शैलियों का अनोखा मिश्रण हुआ.
- स्मिथ ने मुगल वास्तुकला को 'कला की रानी' कहा तथा पर्सी ब्राउन ने इस कला को भारतीय वास्तु कला '**ग्रीष्म काल**' कहा, जो प्रकाश व उर्वरा का प्रतीक है ।
- मुगल स्थापत्यकला के विकास की पहली सीढ़ी 'फतेहपुर सीकरी' आदि के निर्माण में तथा इसकी चरम परिणिति शाहजहाँ के शाहजहानाबाद नगर के निर्माण में दिखाई देती है ।
- इस काल के वास्तुकला के क्षेत्र में पहली बार आकार एवं डिजाइन की विविधता का प्रयोग तथा निर्माण के लिए पत्थर के अलावा पलस्तर एवं गच्चीकारी (Stuceo) का प्रयोग किया गया.
- सजावट के लिए संगमरमर पर जवाहरात से की गई जड़ावट 'पित्रा ड्यूरा' (Pietra Duro) का प्रयोग किया गया.
- पित्रा ड्यूरा का प्रयोग इस काल की एक विशेषता थी ।
- पित्रा ड्यूरा के लिए पत्थरों को काटकर फूल-पत्ते, बेलबूटे को सफेद संगमरमर में जड़ा जाता था ।
- इस काल के बुर्जा एवं गुम्बदों को 'कलश' से सजाया जाता था ।

बाबर शासनकाल में वास्तुकला

- बाबर कालीन निर्माण कार्य ग्वालियर के मानसिंह एवं विक्रमाजीत सिंह के महलों से प्रभावित हैं ।
- बाबर ने अपने उद्यान निर्माण कार्य में इस बात का विशेष ध्यान रखा कि उसका निर्माण सामंजस्यपूर्ण और पूर्णतः ज्यामितीय हो .
- उसने आगरा में ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान का निर्माण करवाया.
- पानीपत के काबुली बाग में निर्मित मस्जिद (1524 ई.) की विशेषता, उसका ईंटों द्वारा किया गया निर्माण थी ।
- रुहेलखण्ड के सम्भल नामक स्थान पर निर्मित **जामी मस्जिद** (1529 ई.) तथा आगरा के पुराने लोदी के किले के भीतर की मस्जिद बाबर द्वारा निर्मित अन्य स्मारक हैं ।
  (i) पानीपत की काबुली मस्जिद, और
  (ii) सम्भल की जामा मस्जिद।
- ये दोनों मस्जिदें 1526 ई. में बनवाई गई थीं। इन मस्जिदों में कोई विशेष नमूना नहीं है।

हुमायूँ शासनकाल में वास्तुकला

- हुमायूँ का अधिकांश जीवन युद्धों व भाग-दौड़ में बीता, अतः उसे इमारतें बनवाने का समय नहीं मिला। फिर भी **हुमायूँ ने 'दीन-ए-पनाह' नामक महल दिल्ली में बनवाया।**
- शेरशाह सूरी ने शायद इसे नष्ट कर दिया। हुमायूँ ने फतेहाबाद व आगरा में भी मस्जिदें बनवाईं। **स्थापत्य कला की एक महत्त्वपूर्ण इमारत हुमायूँ का मकबरा है।** यद्यपि इसका निर्माण अकबर के प्रारम्भिक शासनकाल में हुआ, परन्तु यह हुमायूँ के काल की इमारत है। यह मकबरा ईरानी और भारतीय शैलियों के मिश्रण का नमूना है। इसमें फारसी शैली का प्रभाव भी है। '
- हुमायूँ द्वारा निर्मित 1540 ई. में फतेहाबाद की दो मस्जिदें फारसी शैली में हैं ।

शेरशाह शासनकाल में वास्तुकला

- वास्तुकला के क्षेत्र में शेरशाह का शासनकाल '**संक्रमण का काल**' माना जाता है ।
- उसने दिल्ली को जीतने के पश्चात् 'शेरगढ़' या 'दिल्ली शेरशाही' का निर्माण करवाया.
- वर्तमान में इस नगर के केवल '**लाल दरवाजा**' तथा '**खूनी दरवाजा**' ही शेष हैं ।
- शेरशाह ने हुमायूँ द्वारा निर्मित 'दीनपनाह' को तुड़वाकर उसके मलवे पर 'पुराना किला' का निर्माण करवाया.
- इस किले के अन्दर 1542 ई. में किला-ए-कुहना नामक मस्जिद का निर्माण करवाया.
- उसने रोहतास (बिहार में) में एक किले का निर्माण करवाया.
- सासाराम (बिहार) में झील के अन्दर एक ऊँचे टीले पर निर्मित मकबरा (शेरशाह का) हिन्दू-मुस्लिम वास्तुकला का श्रेष्ठ नमूना है ।
- किला-ए-कुहना मस्जिद के परिसर में एक अष्टभुजी तीन मंजिला मण्डप निर्मित है, जिसे 'शेरमण्डल' कहा जाता है ।

अकबर शासनकाल में वास्तुकला

- मुगलों की स्थापत्य कला सही अर्थ में अकबर के शासनकाल से प्रारम्भ होती है। **अकबर ने अपनी स्थापत्य कला में ईरानी व भारतीय कला का समन्वय स्थापित किया। अकबर के काल की सभी इमारतें लाल पत्थर की हैं और सजावट के लिए संगमरमर का प्रयोग किया गया है।**
- **अकबर द्वारा बनवाए गए भवन या इमारतें निम्न प्रकार हैं**

1. आगरे का लाल किला
2. जहाँगीरी महल
3. अकबरी महल
4. लाहौर का किला

5. इलाहाबाद का किला
6. दीवान-ए-आम
7. जोधाबाई का किला
8. बीरबल का महल
9. पंचमहल, यह भी सीकरी में है और हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का मिश्रण
10. **जामा मस्जिद,** इसका निर्माण 1571 ई. में हुआ। **यह चित्रकारी की दृष्टि से फतेहपुरी सीकरी की सर्वश्रेष्ठ इमारत है।**
11. बुलन्द दरवाजा, इसे अकबर ने गुजरात की विजय के बाद बनवाया था। यह फतेहपुर सीकरी में स्थित है और मुग़ल कालीन दरवाजों में श्रेष्ठ है।
12. **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा,** यह 1571 ई. में बना था। इसकी चित्रकारी देखने योग्य है।
13. सिकन्दरा, इसका निर्माण कार्य अकबर ने प्रारम्भ करवाया था, परन्तु यह 1623 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ।

अकबर द्वारा बनवाए गए भवनों की इतिहासकारों ने बड़ी प्रशंसा की है । स्मिथ ने फतेहपुर सीकरी की इमारतों को अभूतपूर्व व पत्थर पर अंकित कहानी कहा है।

हुमायूँ का मकबरा

- यह मकबरा भारतीय तथा फारसी शैली के समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है ।
- इस मकबरे ने स्थापत्य कला को एक नई दिशा प्रदान की.
- इस मकवरे का खाका ईरान के मुख्य वास्तुकार 'मीरक मीर्जा गियास' ने तैयार किया था ।
- 1564 ई. में निर्मित इस मकबरे में ईरानी प्रभाव के साथ-साथ हिन्दू शैली की 'पंचरथ' से प्रेरणा ली गई है ।
- इसका निर्माण कार्य अकबर की सौतेली माँ हाजी-बेगम की देख-रेख में हुआ था ।
- मकबरे का मुख्य दरवाजा पश्चिम की ओर है ।
- इसकी मुख्य विशेषता सफेद संगमरमर से निर्मित गुम्मद हैं।
- यह भारत का पहला मकबरा है, जिसमें उभरी हुई दोहरी गुम्बद है ।
- यह तराशे गए लालू रंग के पत्थरों द्वारा निर्मित है।
- उद्यानों में निर्मित मकवरों का आयोजन प्रतीकात्मक रूप में करते हुए मकवरों में दफनाए गए व्यक्तियों के देवी स्वरूप की ओर संकेत किया गया है ।
- इस परम्परा में, निर्मित यह मकवरा भारत का पहला स्मारक है ।
- यह मकबरा 'ताजमहल का पूर्वगामी' है तथा इस परम्परा की परिणति ताजमहल में हुई है ।
- अकबर ने मेहराबी एवं शहतीरी शैली का समान अनुपात में प्रयोग किया.
- उसने ऐसी इमारतों का निर्माण करवाया जो अपनी सादगी से ही सुन्दर लगती थीं.
- उसके अपने निर्माण कार्यों में अधिकतर लाल पत्थर का प्रयोग किया.

आगरा का किला

- अकबर के मुख्य वास्तुकार कासिम खाँ के नेतृत्व में 1566 ई. में इस .
- किले का निर्माण कार्य शुरू किया.
- यमुना नदी के किनारे 1½ मील में फैले इस किले के निर्माण में 15 वर्ष तथा 35 लाख रुपये खर्च हुए.
- अकबर ने इसकी मेहराबों पर कुरान की आयतों के स्थान पर पशु-पक्षी, फूल-पत्तों की आकृतियों को खुदवाया.
- इस किले के पश्चिमी भाग में स्थित 'दिल्ली दरवाजे' का निर्माण 1566 ई. में किया गया.
- किला का दूसरा दरवाजा 'अमरसिंह दरवाजा' के नाम से प्रसिद्ध है ।
- किले के अन्दर अकबर ने लगभग 500 निर्माण कराए हैं, जिनमें लाल पत्थर तथा गुजराती एवं बंगाली शैली का प्रयोग हुआ है ।

जहाँगीरी महल

- जहाँगीरी महल ग्वालियर के राजा मानसिंह के महल की नकल है ।
- यह अकबर का उत्कृष्ट निर्माण कार्य है ।
- महल के चार कोनों में चार बड़ी छतरियाँ हैं तथा महल में प्रवेश के लिए बनाया गया दरवाजा नोकदार मेहराव का है।
- पूर्णतः हिन्दू शैली में निर्मित इस महल में संगमरमर का अत्यल्प प्रयोग हुआ है ।
- कड़ियाँ तथा तोड़े का प्रयोग इसकी विशेषता है ।
- जहाँगीरी महल के दाहिनी ओर अकबरी महल का निर्माण हुआ था ।
- जहाँगीरी महल की सुन्दरता का अकवरी महल में अभाव है।

फतेहपुर सीकरी

- शेख सलीम चिश्ती के प्रति आदर प्रकट करने के उद्देश्य से अकबर ने 1571 ई में फतेहपुर सीकरी के निर्माण का आदेश दिया.
- अकबर ने 1570 ई. में गुजरात को जीतकर इसका नाम फतेहपुर सीकरी या विजय नगरी रखा तथा 1571 ई. में इसे राजधानी बनाया.
- लगभग 7 मील लम्बे पहाड़ी क्षेत्र में फैले इस नगर में प्रवेश के लिए अजमेर, आगरा, ग्वालियर, दिल्ली, धौलपुर आदि नाम के 9 प्रवेश द्वार हैं ।
- सीकरी के निर्माण का श्रेय वास्तु विशेषज्ञ बहाउद्दीन को जाता है ।
- फग्र्युसन के अनुसार, 'फतेहपुर सीकरी पत्थर में प्रेम तथा एक महान व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज है ।

जोधाबाई महल

- सीकरी के सभी भवनों में यह महल सबसे बड़ा है।

अध्याय – 4

राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण :-

उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गांधीवादी समाजवादी

राष्ट्रवाद के उदय के कारण :

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ :-

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की। इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । इन औपनिवेशिक नीतियों के परिणाम स्वरूप पैदा हुई समस्याएँ जैसे -गरीबी, ऋणग्रस्तता, बेरोजगारी, अकाल आदि ने भारतीयों को इन समस्याओं से मुक्ति के लिए, कर दिया। दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया । फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा। इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथोड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन:- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परंपरा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :

पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे -स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :

- लिटन कीप्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी। इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया। तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की । इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा। वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) रिपन की नीतियां :

- वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिलं विवाद सामने आया जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया गया। किंतु अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता हैं। अत:रिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता है।

कांग्रेस की स्थापना):1885)

कांग्रेस की स्थापना :

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई।
- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत अधिकारी A.O. ह्युम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- **कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुदीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।**

उदारवादी आंदोलन

- पृष्ठभूमि
- उदय के कारण
- विचार धारा एवं कार्य पद्धति
- मूल्यांकन

पृष्ठभूमि :-

- कांग्रेस की स्थापना के 20 वर्षों बाद भी जब कोई विशेष राजनीतिक उपलब्धि भारतीयों को प्राप्त नहीं हुई तो उनमें निराशा फैली।
- इसी क्रम में, उग्रवादी चेतना का विकास हुआ जिसके प्रमुख नेता लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष आदि थे।

उदय के कारण :-

- ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरुप की पहचान ने राष्ट्रीय चेतना को उग्र बनाया ।वस्तुतः आरंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश शासन की आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत किए जाने से उसका औपनिवेशिक चेहरा उजागर हो गया। अतः अब उससे न्याय की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए स्वयं के अधिकारों की प्राप्ति पर बल क्रम में उग्रवादी विचारधारा का उदय हुआ।
- ब्रिटिश सरकार ने तिलक पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। फलतः भारतीय जनतामें असंतोष फैला। अतः ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ उग्र हुई।
- सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन ने भी उग्रवादी चेतना के विकास को प्रोत्साहित किया। विवेकानन्द ने कहा कि लम्बी से लम्बी रात्रि अब समाप्त होती दिख रही है।
- हमारी मातृभूति गहरी नींद से जाग रही है। इसी तरह अरविंद घोष ने कहा कि स्वतंत्रता हमारे जीवन की सांस है इसी तरह, आर्य समाज ने स्वदेशी, स्वराज, भारत भारतीयों के लिए जैसे विचारों को देकर राष्ट्रीय चेतना को उग्र बनाया।
- अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों ने भी राजनीतिक विचारधारा को उग्र बनाया। वस्तुतः 1896 में इथोपिया ने इटली को तथा 1905 में जापान ने रूस को पराजित किया। इससे यूरोप की अपराजेयता की बात झूठी साबित हुई। अतः भारतीयों में यह विश्वास पैदा हुआ कि भारत से भी अंग्रेजों को बाहर किया जा सकता है?
- कर्जन की नीतियों ने भी राजनीतिक विचारों को उग्र बनाया। वस्तुतः **कर्जन ने कलकत्ता नगर निगम अधिनियम एवं विश्वविद्यालय अधिनियम बनाकर वहाँ सरकारी नियंत्रण में वृद्धि की तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की।**
- इस विभाजन के विरुद्ध भारतीयों ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसी क्रम में स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की हुई।

विचारधारा एवं कार्यपद्धति :

विचारधारा एवं कार्यपद्धति :-

- उग्रवादी नेता ब्रिटिश शासन से घृणा करते थे और अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की बात करते थे। उनका विचार था कि भारतीयों की मुक्ति स्वयं के प्रयत्नों से होगी, अंग्रेजों की कृपा से नहीं। इसी क्रम में, **तिलक ने कहा कि "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम ले कर रहेगें।" इस तरह उग्रवादियों ने अपना लक्ष्य "स्वराज" घोषित किया।**
- तिलक ने उदारवादी राजनीति की आलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस का अधिवेशन तीन दिवसीय छुट्टियों का मनोरंजन है। यदि हम वर्ष में एक बार मेंढ़क की तरह बोलेंगे तो हमे कुछ भी हासिल नहीं होगा।
- उग्रवादियों ने अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी पर बल दिया। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया।
- **उग्रवादियों ने ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति अपनायी। जिसके अंतर्गत धरना प्रदर्शन, बहिष्कार, जन एवं जेल भरो जैसे कार्यक्रम शामिल थे।**
- उग्रवादी नेता प्रार्थना पत्र, स्मरण पत्र जैसे साधनों में विश्वास नहीं करते थे और ऐसा करने वाले उदारवादी राजनीति को राजनीतिक मिश्रावृति की संज्ञा देते थे। दरअसल उग्रवादी नेता नवीन राजनीतिक साधनों जैसे- हड़ताल, बहिष्कार, जन आधारित कार्यक्रमों के प्रयोग पर बल देते थे ।

मूल्यांकन / योगदान :-

- उग्रवादी आंदोलन ने जनशक्ति पर बल दिया और राष्ट्रीय आंदोलन को आम जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया।
- उग्रवादियों ने राजनीतिक संघर्ष की नवीन पद्धतियों को लोकप्रिय बनाया। वस्तुतसंघर्ष की पद्धतियों में हड़ताल, बहिष्कार स्वदेशी पर बल जैसे विचारों को अपनाकर उसे लोकप्रिय बनाया।

सीमाएँ :-

- **उग्रवादी आंदोलन के नेताओं ने धार्मिक प्रतीकों पर अत्यधिक बल दिया ।** जैसे- तिलक ने शिवाजी महोत्सव एवंगणेश महोत्सव पर बल दिया। अतः धार्मिक प्रतीकों पर बल देने से साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला।

मुस्लिम सांप्रदायिक ताकतों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद केन्द्रीय विधानमंडल में 40 सीटें, प्रांतीय विधानमंडल के चुनावों में मद्रास में आधी सीटों पर विजय प्राप्त की।

- बहुमत के अभाव में भी 1928 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तुत पब्लिक सेफ्टी बिल 'का पार्टी ने विरोध किया। इसे भारतीय गुलामी विधेयक नं. 1 की संज्ञा दी गई।
- कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पारित प्रस्तावों तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन की घोषणा के बाद स्वराज पार्टी के सदस्यों ने विधानमंडलों के बहिष्कार की घोषणा कर दी । इस प्रकार स्वराज पार्टी की भूमिका समाप्त हो गई ।

साइमन कमीशन (1927):-

- 1919 का अधिनियम पारित करते समय ब्रिटिश सरकार ने यह घोषणा की कि 10 वर्ष पश्चात् इन सुधारों की समीक्षा करेंगे। किंतु नवम्बर 1927 में इस अधिनियम की समीक्षा के लिए एक भारतीय विधिक आयोग के गठन की घोषणा की गई, जिसके अध्यक्ष जॉन साइमन थे। इसीलिए इसे साइमन कमीशन कहा जाता है। इसके सभी 7 सदस्य विदेशी थे।
- साइमन कमीशन को वर्तमान सरकारी व्यवस्था, शिक्षा का प्रसार एवं प्रतिनिधि संस्थाओं के अध्ययन के पश्चात् यह सुझाव देना था कि भारत में उत्तरदायी सरकार की स्थापना कहाँ तक उचित है और भारत इसके लिए कहाँ तक तैयार हैं?
- आयोग के सभी सदस्यों के विदेशी होने के कारण भारतीयों ने इसका विरोध किया। इनका कहना था कि भारतीय मुद्दे के विचार के लिए आए आयोग में भारतीय सदस्यों का होना जरूरी है। अत :कांग्रेस के 1927 के मद्रास अधिवेशन (अध्यक्ष-मो० अंसारी) में साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया गया इसके बहिष्कार में कांग्रेस, मुस्लिम लीग, किसान मजदूर पार्टी, हिंदू महासभा ने मुख्य भूमिका निभाई जबकि पंजाब के संघवादी पार्टी एवं जस्टिस पार्टी (मद्रास) ने बहिष्कार न करने का निर्णय किया।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी 1928 को बॉम्बे पहुंचा जहाँ उसे काले झण्डे दिखाए गए। इसी क्रम में, लाहौर में इसके विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे लाला लाजपत राय पर पुलिस ने लाठियाँ चलायी । जिससे नवम्बर 1928 में उनकी मृत्यु हो गयी ।
- साइमन कमीशन ने 1930 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की जिसके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं -
  (i) प्रांतों में एक उत्तरदायी सरकार का गठन किया जाए।
  (ii) केन्द्रीय विधानमण्डल का पुर्नगठन किया जाए।
  (iii) केन्द्र में उत्तरदायी सरकार का गठन न किया जाए क्योंकि अभी इसके लिए उचित समय नहीं आया है

नेहरू रिपोर्ट (1928): - भारत सचिव लार्ड बर्केनहेड ने भारतीयों एक ऐसे संविधान निर्माण की चुनौती दी जो सभी दलों एवं गुटों को स्वीकार्य हो । इसी क्रम में, 1928 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ जिसमें शोएब कुरैशी, अली इमाम, SC बोस, मंगल सिंह तेज बहादुर सप्रु आदि शामिल थे। इस समिति में अगस्त 1928 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है। इसके प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित थे:-

- भारत को डोमिनियन स्टेट्स (औपनिवेशिक स्वराज)दिया जाए और एक उत्तरदायी सरकार का गठन हो ।
- मुस्लिम पृथक निर्वाचन प्रणाली समाप्त करके संयुक्त निर्वाचन प्रणाली लागू की जाए।
- भाषायी आधार पर प्रांतों का गठन हो।
- मौलिक अधिकारों जैसे वयस्क मताधिकार तथा महिलाओं को समान अधिकार दिए जाए।
- सिंध को बॉम्बे से अलग कर एक नया प्रांत बनाया जाए।
- केंद्र तथा प्रांतों में शक्तियों का स्पष्ट विभाजन किया जाए तथा अवशिष्ट शक्तियां केन्द्र को दी जाए।
- भारत में एक प्रतिरक्षा समिति तथा उच्चतम न्यायालय की स्थापना की जाए ।
- एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की जाए

नेहरू रिपोर्ट में शामिल प्रावधान सदस्यों के बहुमत के आधार पर बनाए गए नेहरू रिपोर्ट से सुभाष चन्द्र बोस एवं जवाहरलाल नेहरू डोमिनियन स्टेट्स के मुद्दे पर असहमत थे । अतः दोनों ने मिलकर 1928 में भारतीय स्वतंत्रता लीग का गठन किया और पूर्ण स्वराज की बात कही।

दूसरी तरफ जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया और मार्च 1929 में 14 सूत्रीय मांग प्रस्तुत की जिसमें मुस्लिम प्रथक निर्वाचन प्रणाली को बनाए रखने तथा प्रांतों को अवशिष्ट शक्तियां देने की बात मुख्य रूप से शामिल थी। यह मांग मुस्लिम अलगाव तथा साम्प्रदायिकता के विकास में सहायक थी।

कांग्रेस लाहौर अधिवेशन (1929):-कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में गांधी के प्रयासों से जवाहर लाल नेहरु अध्यक्ष बने । इस अधिवेशन में नेहरू ने लंदन में होने वाले गोलमेज सम्मेलन के बहिष्कार की बात की और पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव रखा | तथा गांधी को सविनय अवज्ञाआंदोलन चलाने के लिए अधिकृत किया | 26 जनवरी 1930 को पूरे राष्ट्र में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया।

- लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि मैं एक समाजवादी हूँ। मेरा राजा -महाराजा में कोई विश्वास नहीं है और ना ही मैं उस उद्योग में विश्वास रखता हूं जिसे आधुनिक राजा-महाराजा निर्मित करते हैं तथा पुराने राजा-महाराजा से अधिक जनता की जिंदगी और भाग्य को नियंत्रित करते हैं जो पुराने राजा से अधिक जनता की जिंदगी और भाग्य को नियंत्रित करते हैं, जो पुराने सामंतों के समान ही लूट-पाट एवं शोषण का तरीका अपनाते हैं।

गांधी की 11 सूत्रीय मांग (1930):गांधी ने जून 1930 में अपने यंग इंडिया लेख में 11 सूत्रीय मांगे प्रकाशित कर सरकार के समक्ष रखा ।

- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं। कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- बागौर उत्खनन में कुल 5 कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृदभाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी। तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृदभाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृदभाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृदभाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान: बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान :** बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

अध्याय – 2

8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक राजस्थान का इतिहास

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- **डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार**-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के बौक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में कु-ची-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है ।
- जिसकी राजधानी पि-लो-मो-लो (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को 'जुर्ज' भी कहा है ।
- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्जी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल के बताते हैं ।
- मिस्टर जैक्सन ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।

- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । कनिंघम ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। मुहणौत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

- रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों की उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

अवन्ति / उज्जैन शाखा

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।
- कवि वर्ष की उपाधि मुंज राजा को दी गई थी ।
- आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।
- गुर्जरों तथा अन्य पिछड़ी जातियों (एस. बी. सी.) के लिए राजस्थान सरकार ने 2015 मे 5 प्रतिशत कोटे की व्यवस्था की ।

मण्डौर शाखा (जोधपुर)

संस्थापक - रज्जिल

- गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डौर थी ।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डौर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

- हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है । हरिशचंद्र को प्रतिहारों का गुरु/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते हैं ।
- हरिशचंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा था ।
- इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दह (दद्द) थे । इन चारों ने मिलकर मण्डौर को जीतकर गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की । वैसे रज्जिल तीसरा पुत्र था फिर भी मण्डौर की वंशावली इससे प्रारम्भ होती है ।

रज्जिल: :-

- गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरुष हरिशचंद्र थे, तो मण्डौर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे।
- रज्जिल ने मण्डौर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।

नरभट्ट :-

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख पिल्लापल्ली नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है ।

नागभट्ट प्रथम (730 ई.-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था।
- नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है ।
- नाग भट्ट प्रथम नरभट्ट का पुत्र था । इसे नाहड़ भि कहते थे ।
- इसकी जानकारी हमें पुलिकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से प्राप्त होती है ।
- नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को चावडों से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल को राजधानी बनाया । इसने भीनमाल में प्रतिहार वंश की स्थापना की । नागभट्ट प्रथम ने आबू, जालौर आदि को जीतकर उज्जैन (अवन्तिका) को अपनी दूसरी राजधानी बनाया ।
- नागभट्ट प्रथम के समय सभी राजपूतवंश गुहिल, चौहान, परमार, राठौड़, चंदेल, चालुक्य इसके सामन्त के रूप में कार्य करते थे ।
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट प्रथम ने म्लेच्छ (अरबी) सेना को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।
- नागभट्ट प्रथम का समकालीन अरब शासक जुनैद था । इसकी पुष्टि अल बिलादुरी के विवरण से होती है ।
- हांसोट अभिलेखानुसार समकालीन अरब शासक जुनैद के नियंत्रण से भडौंच छीनकर नागभट्ट प्रथम ने चाहमान भतृवडढ द्वितीय को शासक नियुक्त किया ।

वत्सराज (783 ई. - 795 ई.)

- वत्सराज देवराज व भूयिका देवी का पुत्र था ।
- वत्सराज भीनमाल में गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।
- वत्सराज ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, जो 150 वर्ष तक चला ।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नौज को लेकर हुआ ।

- यह संघर्ष 8वीं सदी में प्रारंभ हुआ ।
- उत्तर भारत के गुर्जर प्रतिहार, दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट वंश, पूर्व में बंगाल के पालवंश के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए । परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट राजा ध्रुव से हारा था ।
- कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था । कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज के समय हुई ।
- सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद उत्तरी भारत की राजनीति की धुरी कन्नौज पर अधिकार करने हेतु संघर्ष प्रारंभ हुआ ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- कन्नौज पर (725 ई.-752 ई.) यशोवर्धन नामक शासक की मृत्यु के बाद तीन महाशक्तियों में संघर्ष प्रारंभ हुआ जो त्रिपक्षीय संघर्ष कहलाता है । ये तीन शक्तियाँ
- उत्तरी भारत के गुर्जर प्रतिहार
- पूर्व के पाल (बंगाल के)
- दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट
- त्रिपक्षीय संघर्ष के समय कन्नौज पर शक्तिहीन आयुधवंश (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के शासकों का शासन था ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत आठवीं शताब्दी ईस्वी में हुई। त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ प्रतिहार वंश ने किया और इसका अंत भी प्रतिहार वंश ने ही किया ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रथम चरण गुर्जर-प्रतिहार वत्सराज, बंगाल के पाल शासक धर्मपाल व दक्षिण के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के बीच हुआ ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर शासित इन्द्रायुध को हराया व उसने पाल शासक धर्मपाल को मुंगेर (मुदगगिरी) के युध्द में पराजित किया । किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ ।
- वत्सराज को रणहस्तिन (युद्ध का हाथी) की उपाधि प्राप्त थी । वत्सराज के समय 778 ई. में उद्योतन सूरी द्वारा 'कुवलयमाला ग्रंथ' की तथा जिन सेन सूरी द्वारा 783 ई. में **'हरिवंश पुराण'** की रचना की गई ।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था ।
- वत्सराज ने ओसियाँ (जोधपुर ग्रामीण) में एक सरोवर तथा महावीर स्वामी का एक मंदिर बनवाया जो कि पश्चिम भारत का प्राचीनतम जैन मंदिर माना जाता है ।
- राजस्थान में प्रतिहारों का प्रमुख केन्द्र ओसियाँ (जोधपुर ग्रामीण) था । वत्सराज के शासनकाल में वलिप्रबंध नामक काव्य ग्रंथ लिखा गया । जिसमें सती प्रथा, नियोग प्रथा एवं स्वयंवर प्रथा की जानकारी मिलती है ।

नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय की उपलब्धियों का वर्णन ग्वालियर प्रशस्ति में मिलता है ।
- अरब आक्रमणकारियों पर पूर्णतः रोक लगाने वाला प्रतिहार राजा नागभट्ट द्वितीय था ।
- नागभट्ट द्वितीय की दानशीलता एवं कन्यादान करने के कारण इन्हें 'कर्ण' की उपाधि दी गई। जिसका उल्लेख ग्वालियर अभिलेख में मिलता है ।
- 833 ई. में नागभट्ट द्वितीय ने गंगा में जल समाधी ली।

रामभद्र (833-836 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय के बाद कुछ समय (833 से 836 ई.) के लिए उसका पुत्र रामभद्र गद्दी पर बैठा। रामभद्र को पाल वंश के शासक से हार का मुँह देखना पड़ा।
- राम भद्र की रानी अप्पी से मिहिर भोज देव नामक पुत्र हुआ ।
- ग्वालियर शिलालेख के अनुसार रामभद्र सूर्य का भक्त था । अतः उसने अपने का नाम पुत्र का नाम मिहिर (सूर्य) भोज देव रखा था ।

मिहिर भोज (836-885 ई.)

- मिहिर भोज का शाब्दिक अर्थ **'सूर्य का प्रतीक'** है ।
- इन्होंने अपने पिता रामभद्र की हत्या कर प्रतिहारों के शासक बना, इस कारण मिहिर भोज को प्रतिहारों में पितृहंता कहा जाता है । मिहिर भोज कट्टर इस्लाम विरोधी था, उसने बलपूर्वक बहुत से मुसलमानों को हिंदु बनवाया।
- मिहिर भोज गुर्जर प्रतिहारवंश में सबसे शक्तिशाली राजा था । मिहिर भोज का काल गुर्जर प्रतिहारवंश का चरमोत्कर्ष काल था । आदि वराह की उपाधि मिहिर भोज शासक ने धारण की है । ग्वालियर प्रशस्ति मे मिहिर भोज के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती है । यह प्रशस्ति भोज के काल में लिखी गई।
- मिहिर भोज ने द्रुम नामक सिक्का भी चलाया था ।
- अरब यात्री सुलेमान व राजतरंगिनी के लेखक कल्हण ने मिहिर भोज के शासन व्यवस्था की प्रशंसा की । कश्मीरी कवि कल्हण की राजतरंगिणी से मिहिर भोज की उपलब्धियों की जानकारी प्रात होती है ।
- 851 ई. में अरब यात्री 'सुलेमान' ने मिहिर भोज के समय भारत की यात्रा की, जिसका विवरण सुलेमान की पुस्तक किताब-उल-सिंध-वल-हिन्द में है ।
- गुर्जर प्रतिहारों की अश्व सेना तत्कालीन भारत में सर्वश्रेष्ठ थी । 893 ई. के एक प्रतिहार लेख से दण्डपाशिक नामक पुलिस अधिकारी का उल्लेख मिलता है ।
- मिहिर भोज वैष्णव धर्म का अनुयायी था। मिहिर भोज ने विष्णु की सगुण व निर्गुण दोनों रूपो में पूजा की तथा विष्णु को ऋषिकेश कहा है ।
- उत्तरप्रदेश के बेग्रमा लेख में इसे **'संपूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला'** बताया गया ।

महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.)

- महेन्द्रपाल का गुरु व दरबारी कवि राजशेखर था ।
- राजशेखर के ग्रंथों में प्रथम शासक महेन्द्रपाल जिसे परमभट्टारक तथा महाराजाधिराज, परमेश्वर की उपाधियों से पुकारा गया ।

- **खड़े गणेश का मंदिर :** कोटा
- **बाजणा गणेश का मंदिर :** सिरोही
- **सारणेश्वर महादेव मंदिर :** सिरोही
- **नाचणा गणेश का मंदिर :** अलवर
- **त्रिनेत्र का मंदिर :** रणथम्भौर
- **हेरम्ब गणपति :** बीकानेर (जूनागढ़ किले में)
- **रावण मंदिर :** मण्डौर (जोधपुर), श्रीमाली ब्राह्मण पूजा करते हैं ।
- **विभीषण मंदिर :** कैथून (कोटा)
- **खोड़ा गणेश** : अजमेर
- **रोकड़िया गणेश :** जैसलमेर
- **सालासर बालाजी :** चुरू, बालाजी के दाढ़ी मुंछ है।
- **72 जिनालय :**भी नमाल (जालौर)
- **मेहन्दीपुर बालाजी मंदिर :**दौसा
- **पावापुरी जैन मंदिर :** सिरोही
- **नारेली के जैन मंदिर :** अजमेर
- **बालापीर :** नागौर (कुम्हारी) यहाँ खिलौने चढ़ाये जाते हैं।
- **मुछाला महावीर :**घाघेराव (पाली)
- **33 करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर:** बीकानेर (जूनागढ़)
- **33 करोड़ देवी-देवताओं की साल :** मण्डोर (अभयसिंह द्वारा निर्मित)
- **नीलकण्ठ महादेव मंदिर :** अलवर, अजयपाल द्वारा निर्मित
- **मालासी भैरूजी का मंदिर :** मालासी (चुरू), यहाँ भैरू जी की उल्टी मूर्ति लगी है।
- **खाटूश्यामजी का मंदिर :** खाटू (सीकर), बर्बरीक का मंदिर
- **कल्याणजी का मंदिर :** डिग्गी (टोंक)

अन्य मंदिर :

- **ऋषभदेवजी का मंदिर :**उदयपुर, पूरे देश में एकमात्र यहीं ऐसा मंदिर है जहां सभी सम्प्रदाय एव जाति (श्वेताम्बर, दिगम्बर, जैन, शैव, वैष्णव, भील) के लोग आते है।
- **सिरयारी मंदिर :**पाली, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भिक्षु की निर्वाण स्थली।
- **मुकन्दरा का शिव मंदिर :**कोटा, राजस्थान का एकमात्र गुप्तकालीन मंदिर।
- **स्वर्ण मंदिर :**पाली, जिसे 'Gateway of Golden and Mini Mumbai' के नाम से जाना जाता है।
- **सुंधा माता का मंदिर :**जालौर, राजस्थान का प्रथम रोप-वे बनाया गया है।
- नागर शैली (गुर्जर प्रतिहार) का अंतिम एव सबसे भव्य मंदिर : सोमेश्वर (किराडू)
- **ओसियां का हरिहर मंदिर :**पंचायतन शैली का प्रथम उदाहरण राजस्थान में।
- **नाकोड़ा भैरव जी :**बालोतरा

राजस्थान की मस्जिदें एवं मजारें

- ईदगाह मस्जिद : जयपुर
- मलिकशाह की दरगाह : जालौर
- मीठेशाह की दरगाह : गागरौण
- गुलाब खां का मकबरा : जोधपुर
- गुलाब कलन्दर का मकबरा : जोधपुर
- गमता गाजी मीनार : जोधपुर
- भूरेखां की मजार : मेहरानगढ़ (जोधपुर)
- इकमीनार : जोधपुर
- सफदरजंग की दरगाह : अलवर
- अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह : तिजारा (खैरथल तिजारा)
- बीबी जरीना का मकबरा : धौलपुर
- मेहर खाँ की मीनार : कोटा
- सैय्यद बादशाह की दरगाह : शिवगंज (सिरोही)
- जामा मस्जिद : शाहबाद (बारां)
- काकाजी पीर की दरगाह : प्रतापगढ़
- मस्तान बाबा की दरगाह : सोजत (पाली)
- रजिया सुल्तान का मकबरा : टोंक
- गूलर कालूद्वान की मीनार : जोधपुर
- तन्हा पीर की दरगाह : मण्डोर
- कबीर शाह की दरगाह : करौली
- कमरुद्दीन शाह की दरगाह : झुन्झुनूं
- पीर अब्दुल्ला की दरगाह : बांसवाडा
- दीवान शाह की दरगाह : कपासन (चित्तौड़गढ़)
- हजरत शक्कर बाबा की दरगाह : नरहड़ (झुन्झुन) इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।
- सैय्यद फखरुद्दीन शाह की दरगाह : गलियाकोटा (डुंगरपुर)
- चल फिर शाह की दरगाह : चित्तौड़गढ़
- पंजाब शाह की दरगाह : अजमेर
- मर्दाना शाह पीर की दरगाह : रणथम्भौर
- फखरुद्दीन चिश्ती की दरगाह : सरवाड़ (अजमेर)
- नालिसर मस्जिद : सांभर (जयपुर ग्रामीण)
- इमली वाले बाबा की दरगाह : ताला (जयपुर)
- लैला मजनूँ की मजार : रायसिंह नगर (अनूपगढ़)
- बाबा दौलत शाह की दरगाह : चौमूं (जयपुर ग्रामीण)
- दुल्हे शाह की दरगाह : पाली
  पीर निजामुद्दीन की दरगाह : फतेहपुर (सीकर)

- **<u>राजस्थान के किले एवं महल</u>**

गागरौन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते है।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था।

जैत्रसिंह :

- 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौन आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते हैं। इनकी दरगाह गागरौन के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह :

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं। इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था। संत पीपा की छत्तरी गागरौन में बनी हुई है।

अचलदास :

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरौन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाड़ी के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
- अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम : उमा सांखला (जांगलू)।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंचीरी वचनिका' नामक ग्रंथ लिखा है।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा) :

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौन पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है)।
- बाद में गागरौन का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र में दिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 ई. के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहा बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कड़ाई (यहाँ राजनैतिक ऊंची पहाड़ी पर बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरौन का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है। कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चित्तौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए : 1303 में द्वारा रतनसिंह के समय : अलाउद्दीन। 1534 में द्वारा कर्मावती के समय : बहादुरशाह। 1568 में उदयसिंह के समय : अकबर।
- कुम्भा ने कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलव तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख है।
- चित्तौड़ का किला में सा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है। धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएँ है।
- यह किला गम्भीरी एवं बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ हैं।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें 7 दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें 'विजय स्तम्भ' (कीर्तिस्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. से 1458 ई. के बीच इसका निर्माण करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते हैं।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।

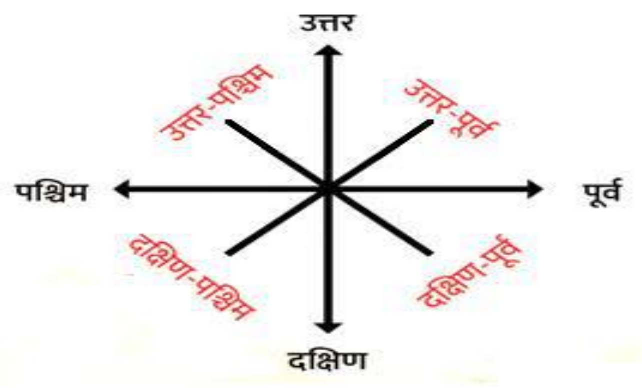

नोट :-

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान "उत्तर पूर्व" दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र- 3)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान "दक्षिणी पश्चिम" दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र – 3,4)
3. भारत में राजस्थान उत्तर-पश्चिम में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

अब तक हमने देखा कि राजस्थान शब्द का उद्भव कैसे हुआ? तथा हम ने समझा कि पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति कहां पर है? अब हम अपने अगले बिंदु "राजस्थान का विस्तार" के बारे में पढ़ते हैं-

राजस्थान का विस्तार -इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा)
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

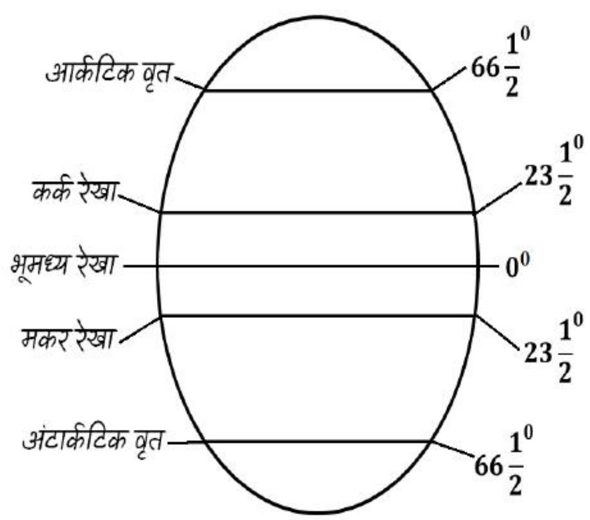

मानचित्र – 1

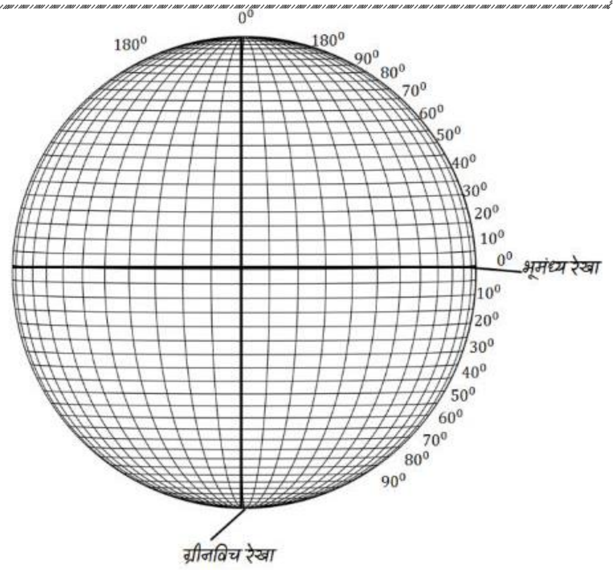

मानचित्र – 2

नोट –

भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी या ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम"में विभाजित किया गया है । इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएँ - वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र -1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90° उत्तरी गोलार्द्ध में और 90° दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180° है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181° होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360° रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली और उत्तर - दक्षिण दिशा में खींची गयी। काल्पनिक रेखाओं को याम्योत्तर, देशान्तर, मध्यान्तर रेखाएं कहते हैं।

ग्रीनविच, (जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है) से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहाँ से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक ''भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़े"।

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30°12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जिसका अंतर 7° 09 मिनट है। जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है। जिसका अंतर 8°47 मिनट है। (देखें मानचित्र A, B)

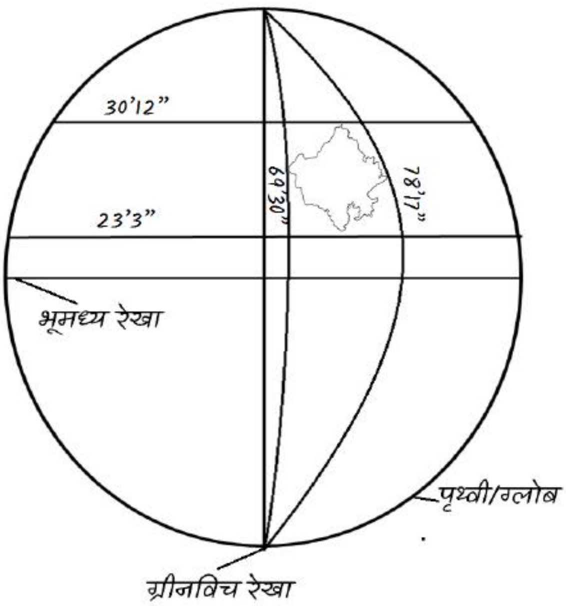

(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार 7°9" (30°12" 23°3") है तथा कुल देशांतरीय विस्तार 8°47" (78°17" 69°30") है।

1° = 4 मिनट

1" =111.4 किलोमीटर होता है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है । जो हिमाच्छादित हिमालय की ऊंचाइयों से शुरू होकर दक्षिण के विषुवतीय वर्षा वनों तक फैला हुआ है। जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।

1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था, लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल की दृष्टि से) राजस्थान बन गया।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437 थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है ।

- **राजस्थान में कर्क रेखा :-**

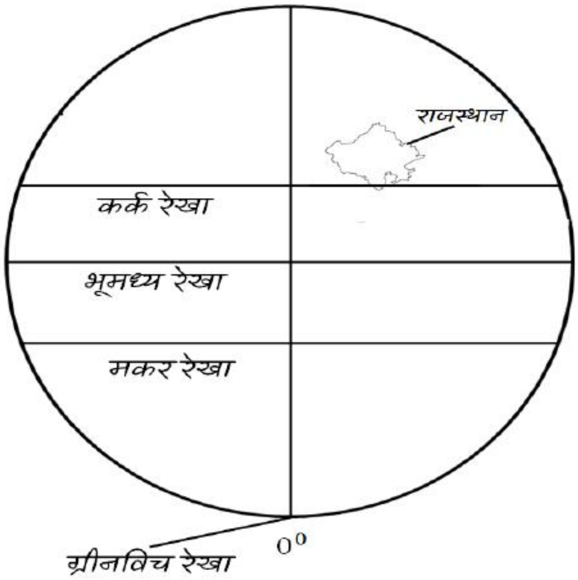

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-
1.गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7.त्रिपुरा 8.मिजोरम

- राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिले के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।
- राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।
- राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहाँ पर तापमान अधिक होता है। जैसे - जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है, वैसे - वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।
- राजस्थान में बाँसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।

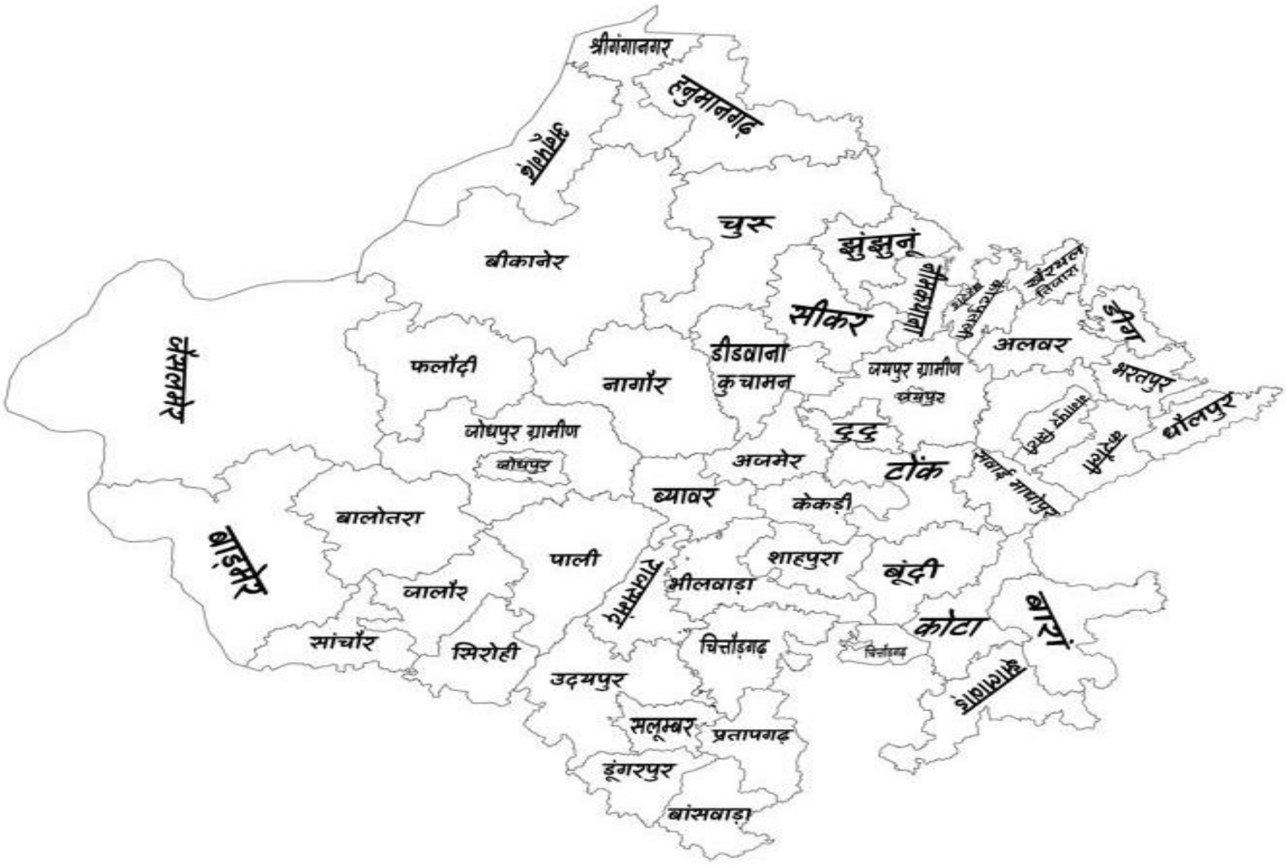

रेडक्लिफ रेखा

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है। रेडक्लिफ रेखा 17 अगस्त 1947 को भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा बन गई । इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है।

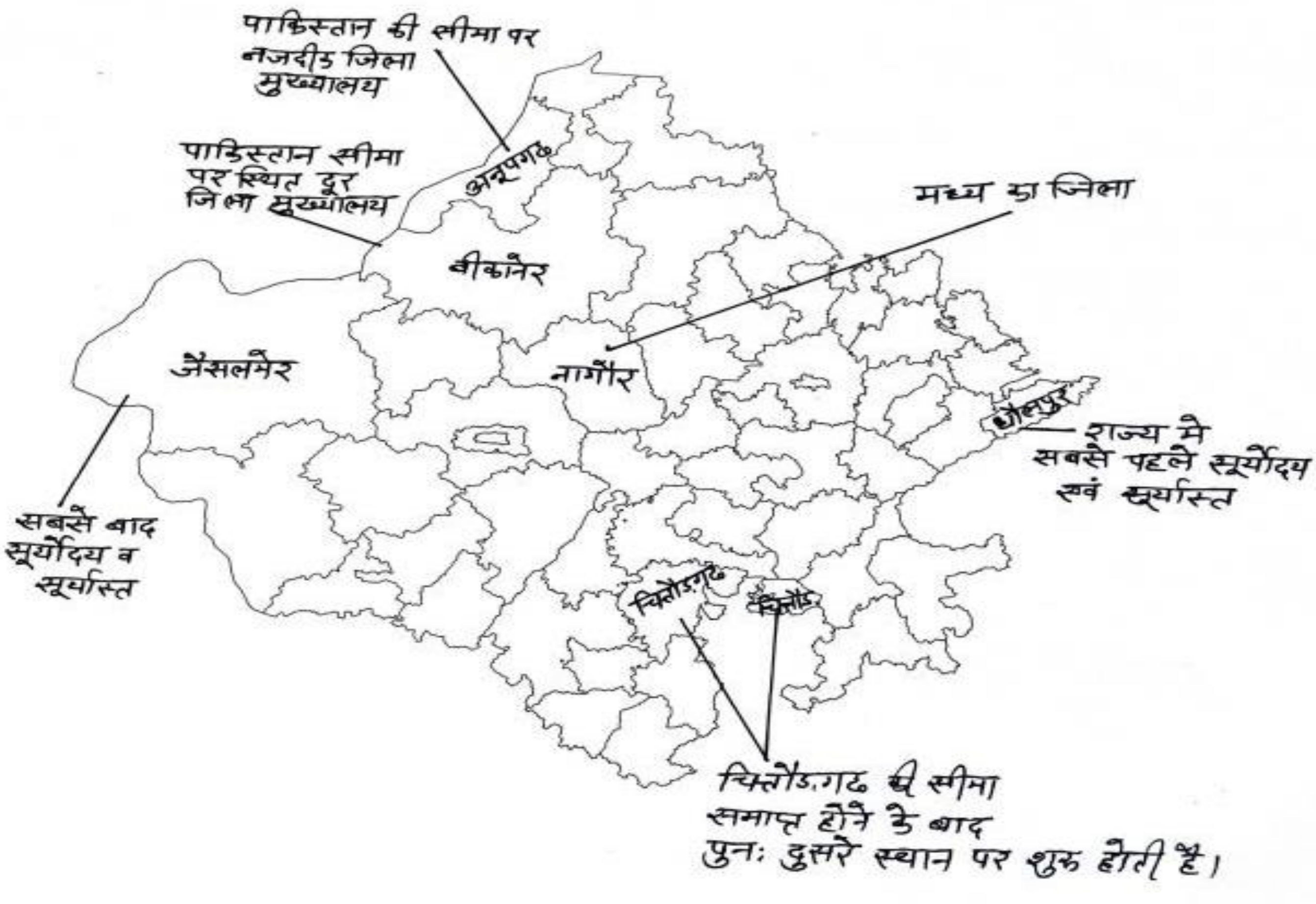

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के चार राज्य स्थित है।
1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
2. पंजाब (547 कि.मी.)
3. राजस्थान (1070 कि.मी.)
4. गुजरात (512 कि.मी.)
रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा - राजस्थान (1070 कि.मी.)
रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात(512 कि.मी.)
रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय- श्रीनगर
रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर
रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान
रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब
रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा 1070 कि.मी. है। जो राजस्थान के चार जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर
2. अनूपगढ़
3. बीकानेर.
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के हिंदुमल कोट से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के शाहगढ़ बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।
राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा - बहावलपुर
राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर
पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान के सीमा को छूते हैं।
1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत
रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
राजस्थान से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) रेडक्लिफ रेखा से लगती है।
रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय –अनूपगढ़
रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला - श्रीगंगानगर
राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 3 (बीकानेर, जैसलमेर, अनूपगढ़)

राजस्थान के 22 जिलें (जयपुर ग्रामीण, जयपुर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, सीकर, गंगापुरसिटी, सलुम्बर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बालोतरा, जालौर, पाली, राजसमन्द, शाहपुरा, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, बूंदी, दौसा और दूदू) ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय ।
झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।
राजस्थान के 2 ऐसे जिले है जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात

राजस्थान के 4 जिले ऐसे है जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-
हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा
धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश
बाँसवाड़ा :- मध्यप्रदेश + गुजरात
डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा
राजस्थान के परिधिय जिले – 28 (गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनू, नीम का थाना, कोटपूतली बहरोड, खैरथल तिजारा, अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई-माधोपुर, बारां, झालावाड़, कोटा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, सांचौर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, अनुपगढ़।)
राजस्थान के अन्तर्राज्जीय सीमा वाले जिले – 25 (गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनू, नीम का थाना, कोटपूतली बहरोड, खैरथल तिजारा, अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई-माधोपुर, बारां, झालावाड़, कोटा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, सांचौर, बाड़मेर।)
राजस्थान के केवल अन्तर्राज्जीय सीमा वाले जिले - 23(हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनू, नीमकाथाना, कोटपूतली बहरोड, खैरथल तिजारा, अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई-माधोपुर, बारां, झालावाड़, कोटा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, सांचौर)
अन्तर्वर्ती जिले जो किसी अन्य राज्य/राष्ट्र के साथ कोई सीमा नहीं बनाते - 22

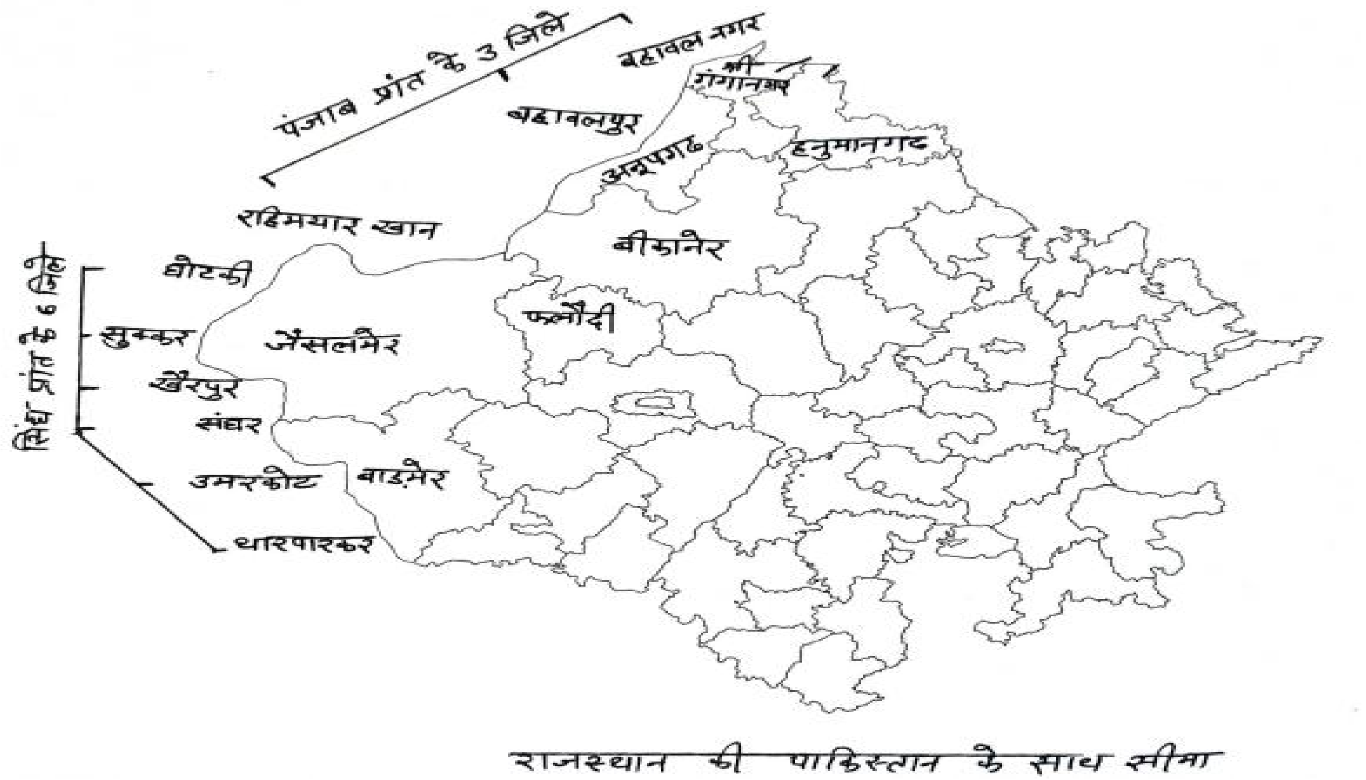

<u>राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमा</u>

राजस्थान के साथ जिन राज्यों की सीमा लगती है उन राज्यों के नाम :-

शोर्ट ट्रिक :- *"पं. हरि उत्तर में गुम गयों"*

सूत्र		***राज्य***
पं	-	*पंजाब*
हरि	-	*हरियाणा*
उत्तर	-	*उत्तर प्रदेश*
में	-	*मध्य प्रदेश*
गु	-	*गुजरात*

पंजाब (89 किमी०)

- *राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है।*
- *पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।*
- *पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।*
- *पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला हनुमानगढ़ व छोटा श्रीगंगानगर जिला है।*

शोर्ट ट्रिक

पंजाब की सीमा से सटे राजस्थान राज्य के जिले है। ''श्री हनुमान''

सूत्र		***जिला***
श्री	-	*श्रीगंगानगर*
हनुमान	-	*हनुमानगढ़*

हरियाणा (1262 किमी०)

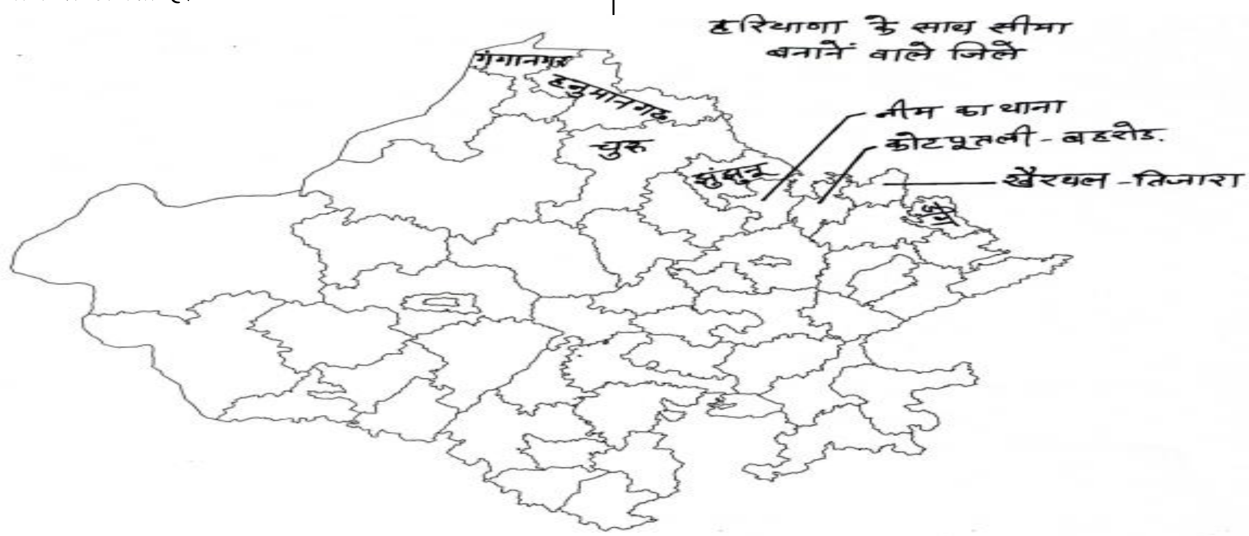

7. गोगामेड़ी पशु मेला
नोहर (हनुमानगढ़) में आयोजित होता है। इस मेले का आयोजन श्रावण पूर्णिमा से भाद्रपद पूर्णिमा में होता है। हरियाणवी नस्ल से संबंधित है। राजस्थान का सबसे लम्बी अवधि तक चलने वाला पशु मेला है।

8. महाशिवरात्रि पशु मेला
करौली में फाल्गुन मास में आयोजित होता है। हरियाणवी नस्ल से संबंधित है।

9. जसवंत प्रदर्शनी एवं पुश मेला
इस मेले का आयोजन आश्विन मास में होता है। हरियाणवी नस्ल से संबंधित है।

10. श्री मल्लीनाथ पशु मेला
- तिलवाड़ा (बालोतरा जिले) में इस मेले का आयोजन होता है।
- यह मेला चैत्र कृष्ण ग्यारस से चैत्र शुक्ल ग्यारस तक लूनी नदी के तट पर आयोजित किया जाता है।
- थारपारकर (मुख्यत:) व कांकरेज नस्ल की बिक्री होती है।
- देशी महीनों के अनुसार सबसे पहले आने वाला पशु मेला है।

11. बहरोड़ पशु मेला
कोटपूतली-बहरोड़ जिले में आयोजित होता है। मुर्राह भैंस का व्यापार होता है।

12. बाबा रघुनाथ पुरी पशु मेला
सांचैर (जालौर) में आयोजित होता है।

13. सेवड़िया पशु मेला
रानीवाड़ा (सांचौर) में आयोजित होता है। रानीवाड़ा राज्य की सबसे बड़ी दुग्ध डेयरी है।

14. सारणेश्वर पशु मेला – यह मेला भाद्रपद शुक्ला द्वादशी को भरता है।
यह मेला सिरोही से लगभग 3 किमी दूर सारणेश्वर मंदिर में यह मेला भरता है।
यह मेला रेबारी जाति का सबसे बड़ा मेला है।

अध्याय – 8

खनिज संसाधन

खनिज
- खनिज :- वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि भू-गर्भ से खनन क्रिया द्वारा बाहर निकाले जाते हैं। खनिज प्रमुखतया प्राकृतिक एवं रासायनिक पदार्थों के संयोग से निर्मित होते हैं।
- इनका निर्माण अजैविक प्रक्रियाओं के द्वारा होता है। सामान्य शब्दों में, वे सभी पदार्थ जो कि खनन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, खनिज कहलाते हैं।
- जैसे – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	**अयस्क**
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	सीसा
डोलोमाइट	मैग्नीशियम
सिडेराइट	लोहा
मेलाकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार- खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिज:- लौह धातु: लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, आदि।
अलौहधातु: तांबा, लैंड, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट आदि।
बहुमूल्य खनिज: सोना, चाँदी, प्लेटिनम, आदि।

अधात्विक खनिज:- अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना, पत्थर, संगमरमर, बलुआ, पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिज: कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडार:
- आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में : - इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं ।
- जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में होती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में होता है । पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं ।

उदाहरण: टिन, जस्ता, लैंड, आदि।
अवसादी चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टानों में खनिज परतों में पाये जाते है ।

1. मुख्यतः अधात्विक ऊर्जा खनिज पाए जाते हैं।
उदाहरण: कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवण और सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वारा: - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है। बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में : - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाए जाते हैं और जमा होते हैं । इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाए जाते हैं । ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनका अपरदन जल द्वारा नहीं होता है ।

उदाहरण :- सोना, चाँदी, टिन, प्लेटिनम, आदि।

महासागर के जल में: - समुद्र में पाए जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है । लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैग्नीशियम और ब्रोमीन निकाला जाता है।

राजस्थान में खनिज संसाधन –प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

- जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है ।
- दोस्तों **खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है।** राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में **सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है ।** देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।
- राजस्थान में खनिज मुख्य रूप से अरावली में पाए जाते हैं । अतः इसे खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है ।

राजस्थान की भूमिका :-

भंडारण में	उत्पादन में	विविधता में	आय में
द्वितीय स्थान	द्वितीय स्थान	प्रथम स्थान	पाँचवा स्थान

(57 प्रकार के खनिज) 81 प्रकार के

राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है - पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -
जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, **एस्बेस्टस** 96%, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, **फेल्सपार** 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

1. **धात्विक खनिज** – लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।
2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

दोस्तों खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

- **धात्विक खनिज –**

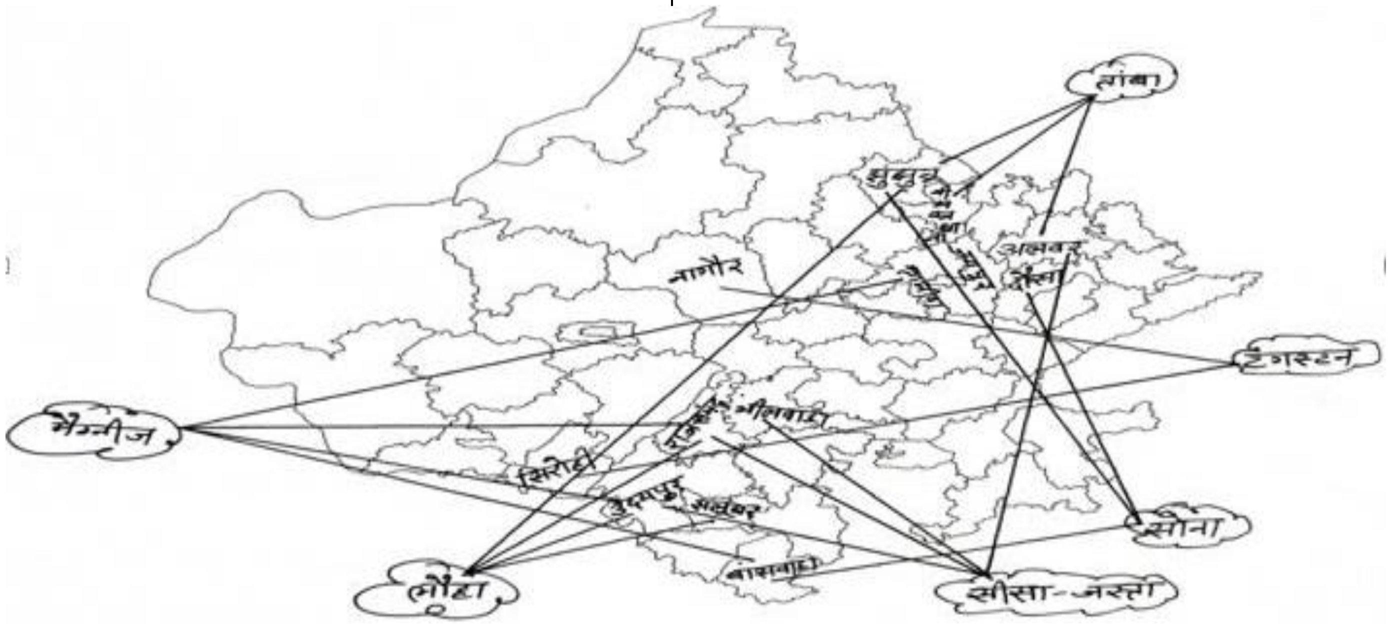

1. लोहा –राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर – पूर्व एवं दक्षिण- पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट - 74 %
ii. हेमेटाइट - 65 %
iii. लिमोनाइट - 50 %
iv. सिडेराइट - 40%

राजस्थान में मुख्य रूप से लोहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान-

- मोरिजा- बानोल- सामोद, जयपुर ग्रामीण
- नीमला- राइसेला- लालसोट, दौसा
- सिंघाना- डाबला- झुंझुनूं
- नीम का थाना
- थूर हुण्डेर - उदयपुर
- नाथरा की पाल – सलूम्बर
- **राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर ग्रामीण जिले से होता है** । यह हेमेटाइट प्रकार का है।

2. सीसा-जस्ता :-

- सीसे जस्ते के अयस्क को गैलेना कहा जाता है । **यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़वा खनिज भी कहते हैं।**
- राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे – जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चाँदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान-

- **जावर खान- उदयपुर**
  यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।
- राजपुरा–दरीबा- राजसमंद
- पुर- दरीबा- भीलवाड़ा
- रामपुरा- आगूचा- भीलवाड़ा
- गुढ़ा किशोरीदास - अलवर
- चौथ का बरवाड़ा - सवाई माधोपुर
- मोचिया – मगरा - उदयपुर
- रेल- मगरा- राजसमंद

राजस्थान में जस्ते के उत्खनन के लिए दो संयंत्र स्थापित किये गये हैं।

i. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर :- इसकी स्थापना केन्द्र सरकार के द्वारा की गई जो मुख्य रूप से देबारी नामक स्थान पर उत्खनन का कार्य करता है।

ii. चन्देरिया सुपर जिंक स्मेल्टर, चितौड़गढ :- इसकी स्थापना ब्रिटेन के सहयोग से की गई जो मुख्य रूप से जस्ते का उत्खनन कार्य करता है।

राजस्थान में सीसा गलाने का संयंत्र न होने के कारण सीसे के अयस्क को टुंडू बिहार भेजा जाता है। राजसमंद के दरीबा, नामक स्थान पर सीसा गलाने का संयंत्र स्थापित किया गया है लेकिन इसकी क्षमता कम होने के कारण सीसे के बचे हुए अयस्क को बिहार भेजा जाता है।

3. चाँदी :- देश में सबसे अधिक चाँदी का उत्पादन राजस्थान में होता है।

प्रमुख खान

- राजपुरा – दरीबा - राजसमंद
- रामपुरा - आगूचा- भीलवाड़ा

4. सोना :- राजस्थान में सबसे अधिक सोने के भण्डार बाँसवाड़ा जिले में पाया जाता है।

इसके अलावा दौसा जिले में भी सोने के क्षेत्रों का पता लगाया गया है।

बाँसवाड़ा के प्रमुख खान

- आनन्दपुर - भूकिया क्षेत्र
- जगतपुरा

अन्य स्थान

- धानोता – झुंझुनू
- धानी बासडी – दौसा

नोट – आनन्दपुर भूकिया बाँसवाड़ा में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के द्वारा सोने की खोज का कार्य किया जा रहा है।

5. तांबा :- तांबा राजस्थान में सबसे अधिक **खेतड़ी (नीमकाथाना)** नामक स्थान से निकाला जाता है।

- तांबे के उत्पादन में राजस्थान का उड़ीसा के बाद दूसरा स्थान है एवं भंडार की दृष्टि से उड़ीसा, आंध्रप्रदेश के बाद तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में तांबा परिशोधन शाला खेतड़ी कस्बे में स्थापित की गयी है।
- राजस्थान में तांबे के उत्खनन का कार्य हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड के द्वारा किया जा है।
- हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की राजस्थान में 3 परियोजनाएँ चल रही है।

  i. HCL- Hindustan Copper Ltd.- खेतड़ी (नीमकाथाना)
  ii. चांदमारी- कॉपर लि.- नीमकाथाना
  iii. नीम का थाना कॉपर लि. – नीमकाथाना

तांबे के प्रमुख उत्खनन क्षेत्र

खेतड़ी (नीमकाथाना) व कुछ क्षेत्र झुंझुनू

{तांबा तीनों चट्टानों में पाया जाता है आग्नेय, अवसादी तथा कायांतरित}

- खो - दरीबा - अलवर
- नीम का थाना - नीमकाथाना
- पुर बनेड़ा – दरीबा - भीलवाड़ा
- भगोनी - अलवर
- बन्नों वाली की ढाणी - सीकर

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNIc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE